[Total No. of Printed Page : 4] Roll No.....

डी0 पी0 जे0-104

मुहूर्त विचार

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा (डी0 पी0 जे0-12/16/17)

प्रथम सेमेस्टर, सत्र, 2019

समय : 3 घंटा पूर्णांक-80

नोट : यह प्रश्नपत्र 80 अंकों का है जो तीन (3) खण्डों क, ख और ग में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड- 'क'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. ध्रुव संज्ञक, चर संज्ञक, उग्रसंज्ञक-मिश्र संज्ञक नक्षत्रों का पृथक-2 उल्लेख करें।
2. क्षयाधिमास के लक्षण के साथ उसमें वर्जित कार्यों का वर्णन करें।
3. गृह प्रवेश एवं देवालय प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त को लिखें।
4. सोलह संस्कारों के नाम तथा उसके सम्पादन में काल की उपयोगिता पर प्रकाश डालें।

खण्ड- 'ख'
(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिए गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. उपनयन मुहूर्त्त को लिखें।
2. आनन्दादि अष्टविंशति (28) योगों के ज्ञान का प्रकार लिखें।
3. गुरू शुक्रास्त में वर्जित कार्यों का उल्लेख करें।
4. जलाशयारम्भ मुहूर्त्त लिखें।
5. विद्यारम्भ मुहूर्त लिखें।
6. काकिणी विचार लिखें।
7. बृषवा स्तुचक्र निर्माण विधि लिखें।
8. चूड़ाकरण मुहूर्त लिखें।

खण्ड- 'ग'
(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए गये हैं। प्रत्येक प्रश्न हतु (01) अंक निर्धारित हैं। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सही उत्तर का चयन करें।

1. पूर्णिमा तिथि का स्वामी कौन है-

(क) अग्नि (ख) ब्रह्मा
(ग) सूर्य (घ) चन्द्र

2. दारूण संज्ञक नक्षत्र है-
   (क) स्वाती
   (ख) विशाखा
   (ग) ज्येष्ठा
   (घ) अनुराधा

3. मूल नक्षत्र का अधिपति है-
   (क) यम
   (ख) उरग
   (ग) निऋति
   (घ) अर्यमा

4. मूलनक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से जातक फल होता है-
   (क) जातक के पिता का नाश
   (ख) धननाश
   (ग) भ्रातृनाश
   (घ) मातृनाश

5. आषाढ़ मास में मूल का वास होते हैं-
   (क) स्वर्ण लोक में
   (ख) पाताल लोक में
   (ग) मर्त्यलोक में
   (घ) कुरूक्षेत्र में

6. ब्राह्मणों के उपनयन का वर्ष निर्दिष्ट है-
   (क) 8 वें वर्ष में (ख) 9 वें वर्ष में
   (ग) 10 वें वर्ष में (घ) 11 वें वर्ष में

7. ब्राह्मणों अधिपति ग्रह हैं-
   (क) सूर्य
   (ख) चन्द्र
   (ग) बुध
   (घ) गुरू

8. मीन राशि में चन्द्रमा का वास होता है-
   (क) पूर्व दिशा में
   (ख) दक्षिण दिशा में
   (ग) पश्चिम दिशा में
   (घ) उत्तर दिशा में

9. देवालय निर्माण हेतु मीनमास में राहु का मुख रहता है-
   (क) ईशान कोण
   (ख) वायव्य कोण में
   (ग) अग्नि कोण में
   (घ) नैर्ऋत्य कोण में

10. रसोई ग्रह का निर्माण होता है-
   (क) ईशान कोण में
   (ख) अग्नि कोण में
   (ग) नैर्ऋत्य कोण में
   (घ) वायव्य कोण में

*****